ओविन

ओविन

ओविन के पास एक मुलायम, पीला कंबल था. “जहाँ मैं जाऊँगा मेरा कंबल भी जायेगा,” ओविन ने कहा. लेकिन मिसेज़ ट्वीज़र्स सहमत न थीं. उन्हें लगता था कि ओविन बड़ा हो गया था और उसे कंबल छोड़ देना चाहिए. ओविन नहीं माना. वह कुछ भी सुझाव देतीं, कंबल-परियाँ या सिरका, ओविन कंबल अपने पास रखने का तरीका खोज ही लेता था. लेकिन जब स्कूल जाने का समय हुआ तो ओविन की माँ जानती थी कि उसे क्या करना होगा....और तब ओविन और कंबल तो प्रसन्न थे, मिसेज़ ट्वीज़र्स भी प्रसन्न थीं.

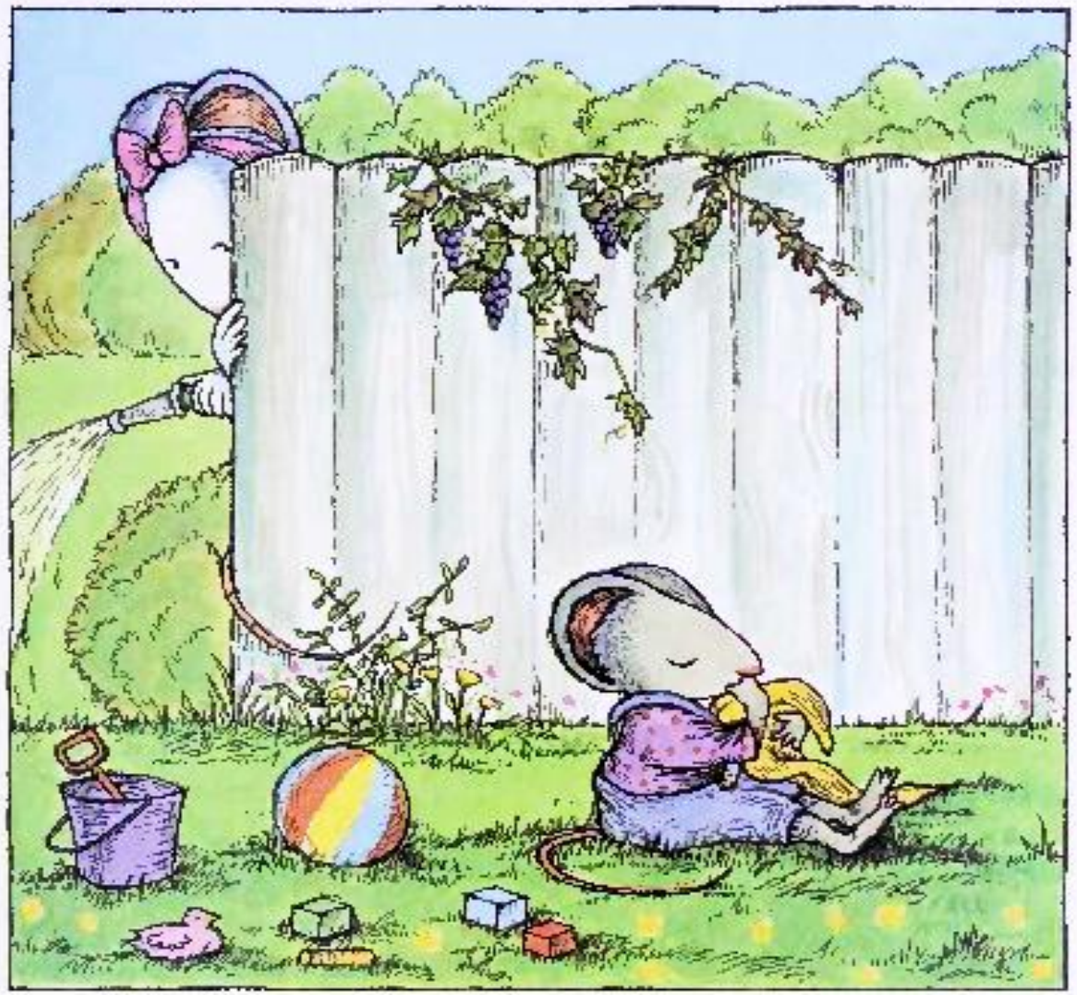

ओविन के पास एक मुलायम, पीला कंबल था.
जब वह नन्हा शिशु था तब से यह उसके पास था.
वह इसे पूरे मन से प्यार करता था.

“कंबल वहीं जाता है जहाँ मैं जाता हूँ,” ओविन ने कहा.

और वह जाता था.

सीढ़ियों के ऊपर, नीचे, बीच में.

बाहर, भीतर, सिर के बल.

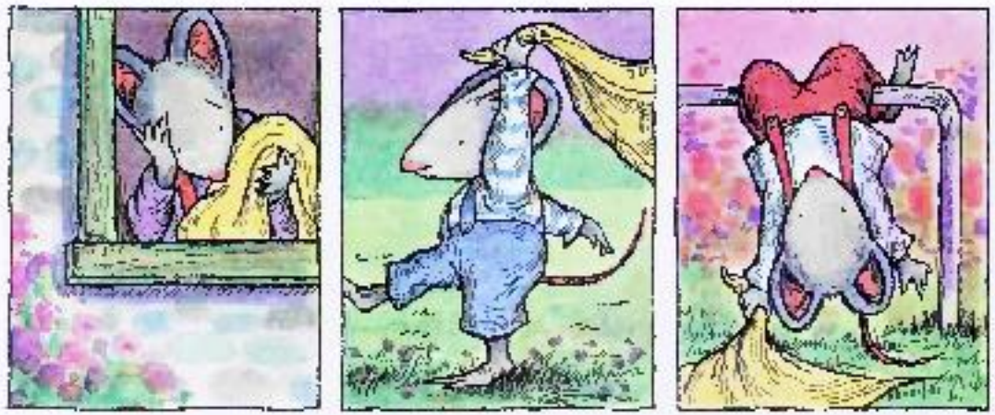

“कंबल को वही अच्छा लगता है जो

मुझे अच्छा लगता है,” ओविन ने कहा.

और उसे अच्छा लगता था.

संतरे का रस, अंगूर का रस, चॉकलेट मिला दूध.

आइस क्रीम, मक्खन, सेब का केक.

“इस कंबल को हर जगह उठा कर ले जाने के लिए क्या वह थोड़ा बड़ा नहीं हो गया?” मिसेज़ ट्वीज़र्स ने पूछा. “क्या तुमने कंबल-परी के बारे में नहीं सुन रखा?”

ओविन के माता-पिता ने नहीं सुन रखा था.

मिसेज़ ट्वीज़र्स ने उन्हें सारी जानकारी दी.

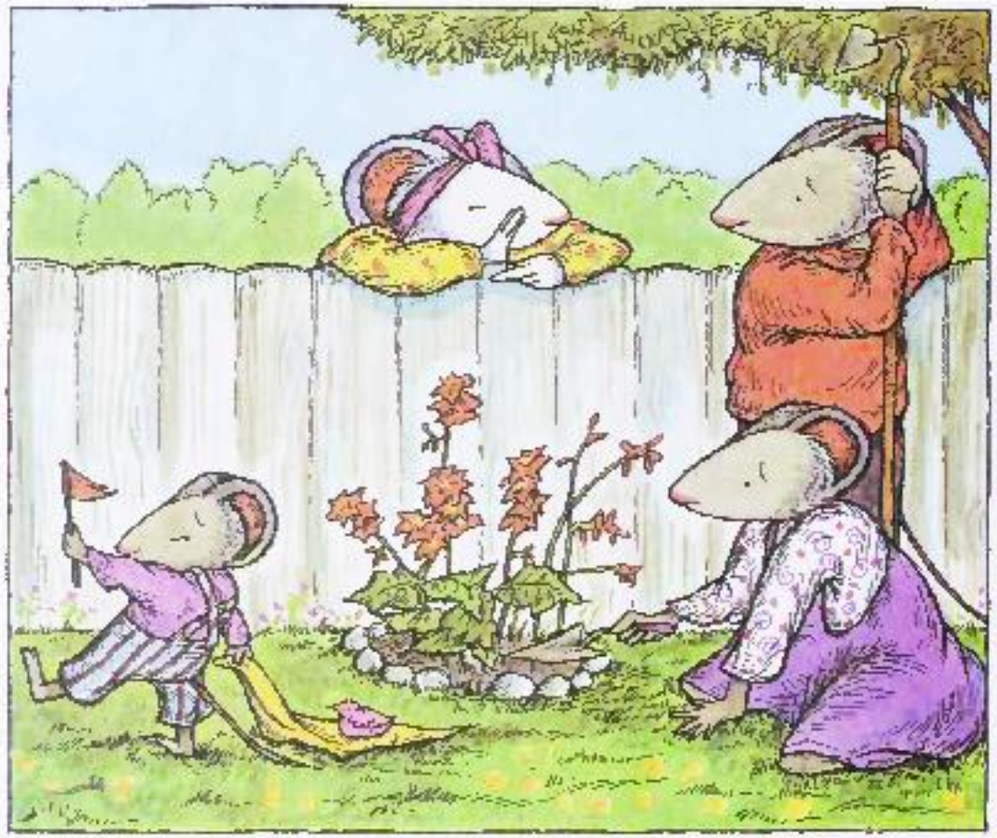

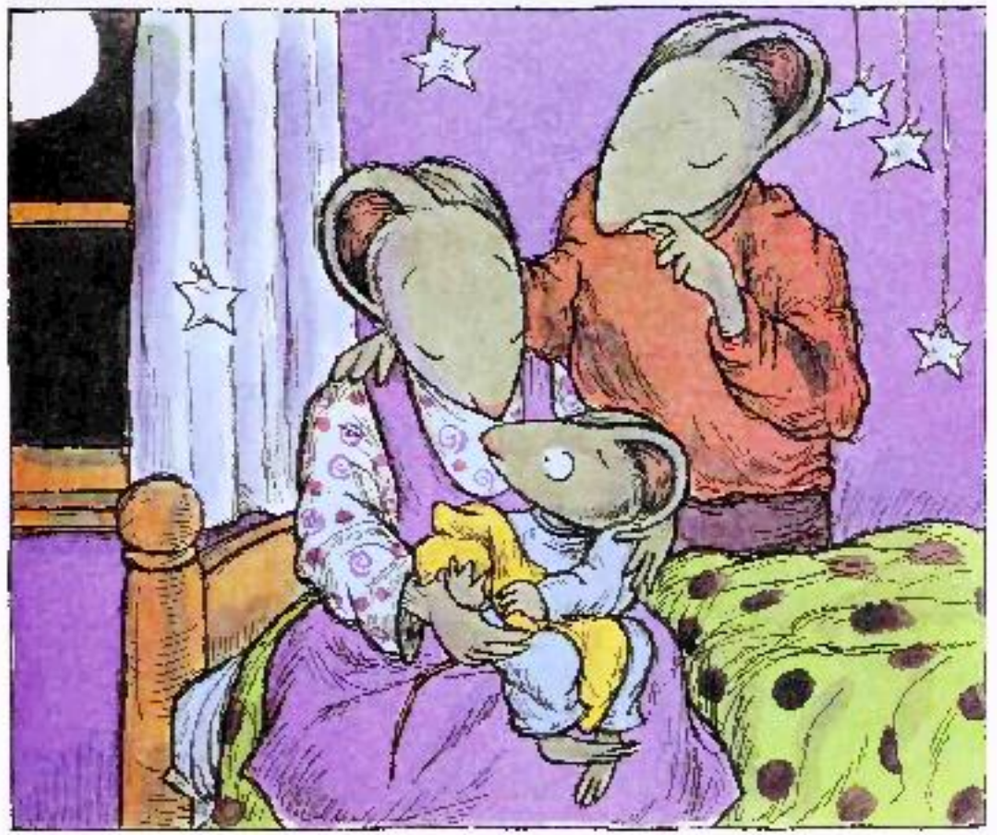

उस रात ओविन के माता-पिता ने उससे कहा कि कंबल को सिरहाने के नीचे रख दे.

सुबह कंबल गायब हो जायेगा, लेकिन उसके बदले कंबल-परी सिरहाने के नीचे बहुत ही आश्चर्यजनक, बहुत ही उत्तम उपहार उस जैसे शानदार, बड़े लड़के के लिए रख देगी.

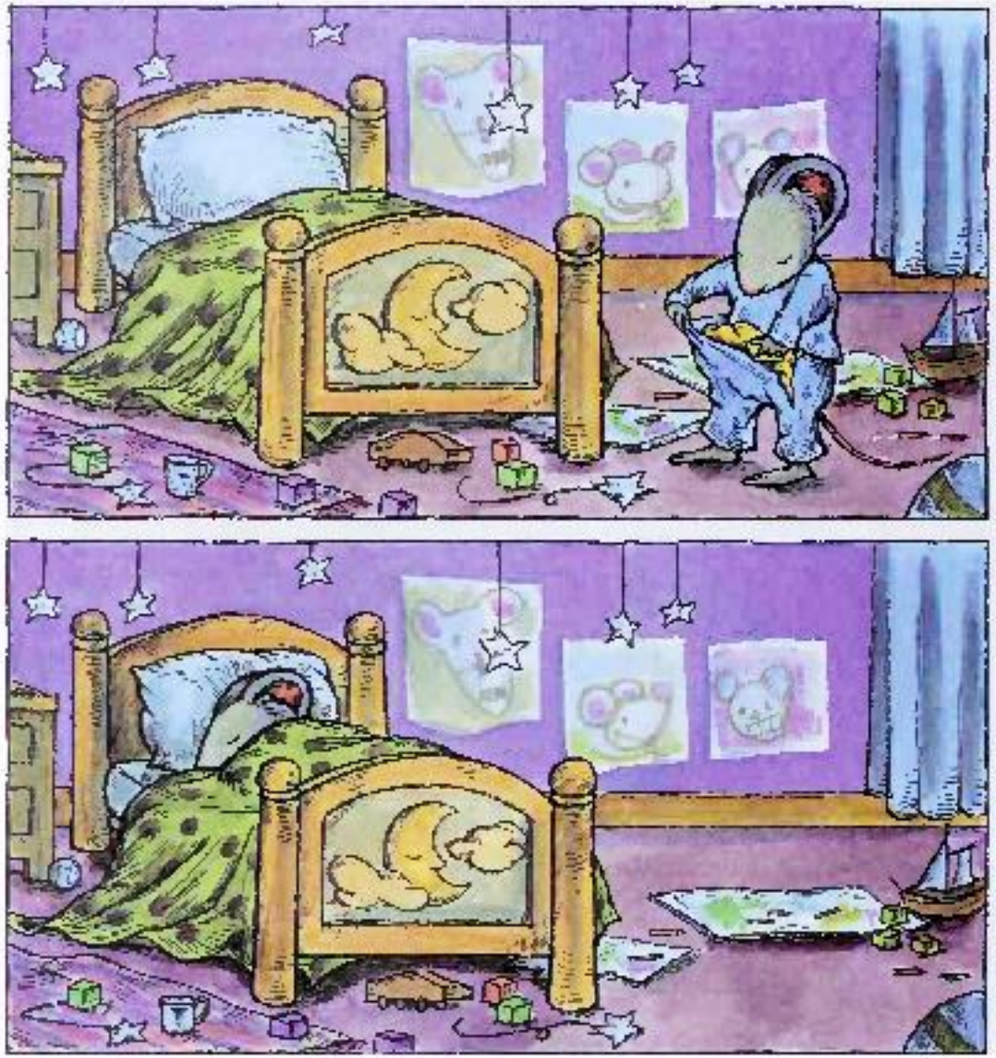

ओविन ने कंबल को अपने पायजामे में ठूँस लिया और सो गया.

“कंबल-परी नहीं होती,” अगली सुबह ओविन ने कहा.

“सच में,” ओविन की माँ ने कहा.

“कोई आश्चर्य नहीं,” ओविन के पिता ने कहा.

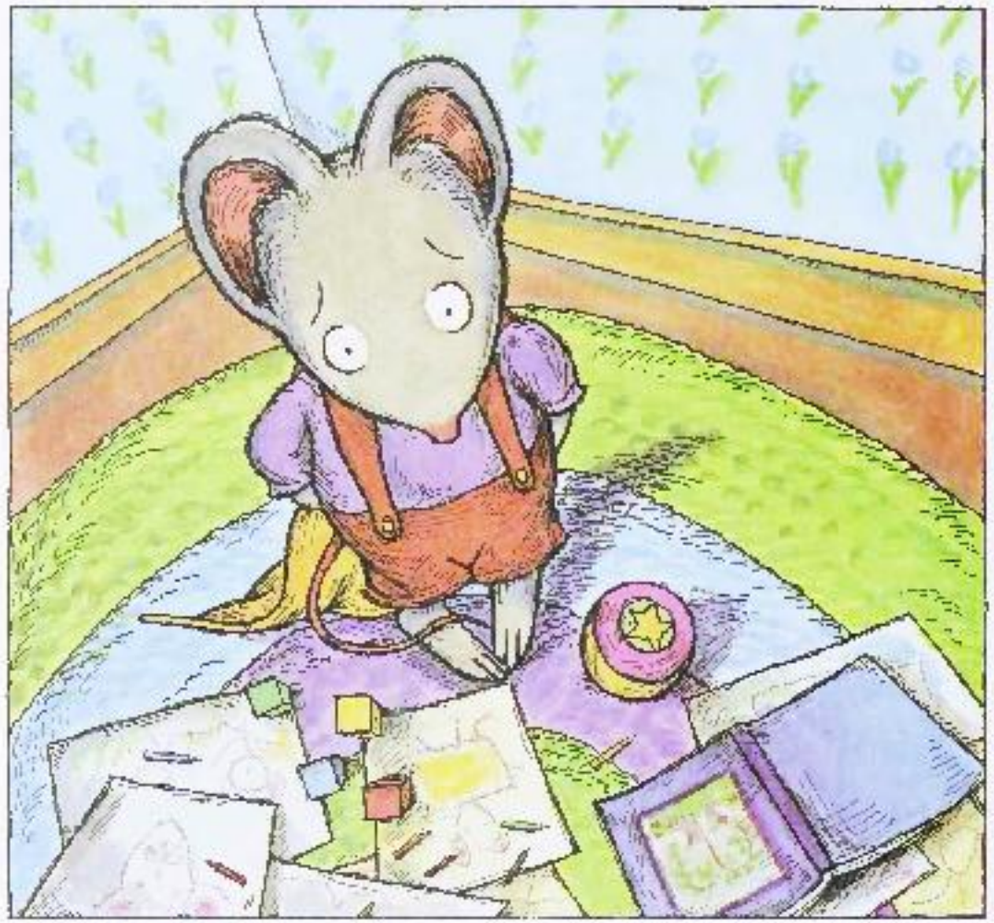

“कंबल गंदा है,” ओविन की माँ ने कहा.

“कंबल फटा-पुराना है,” ओविन के पिता ने कहा.

“नहीं,” ओविन बोला. “कंबल सुंदर है.”

और वह था.

पीठ पर कंबल लटका कर ओविन कैप्टन प्लंजर बन जाता.

कंबल ओढ़ कर ओविन अदृश्य हो जाता.

नाखून काटने और बाल काटने और दाँतों के डाक्टर के पास जाने के समय भी ओविन को कंबल चाहिए ही था.

"वह जीवन-भर बच्चा बन कर नहीं रह सकता," मिसेज़ ट्वीज़र्स ने कहा. "तुम ने सिरके के जादू के बारे में नहीं सुन रखा क्या?"

ओविन के माता-पिता ने नहीं सुना था.

मिसेज़ ट्वीज़र्स ने उन्हें सारी जानकारी दी.

जब ओविन देख न रहा था, उसके पिता ने कंबल को वह कोना जो ओविन को बहुत पंसद था सिरके में डुबो दिया.

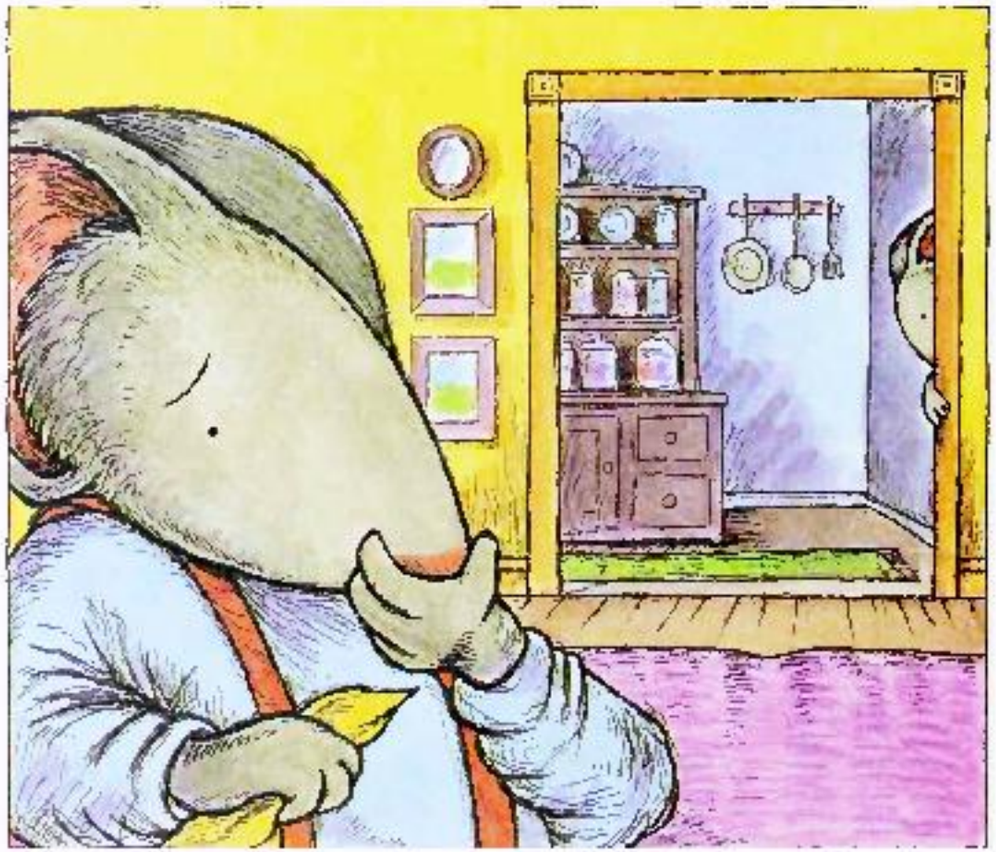

ओविन ने सूँघा और फिर सूँघा और एक बार फिर सूँघा.

उसने कंबल का एक नया कोना चुना.

फिर उसने बदबूदार कोने को अपने रेत के बॉक्स के चारों तरफ रगड़ा, बगीचे में मिट्टी खोद कर उसे गाड़ दिया और फिर बाहर निकाला.

“नये जैसा हो गया है,” ओविन ने कहा.

कंबल अब उतना मुलायम न था.

पर ओविन ने परवाह न की.

वह उसे उठाता.

और उसे पहनता.

और उसे खींचता.

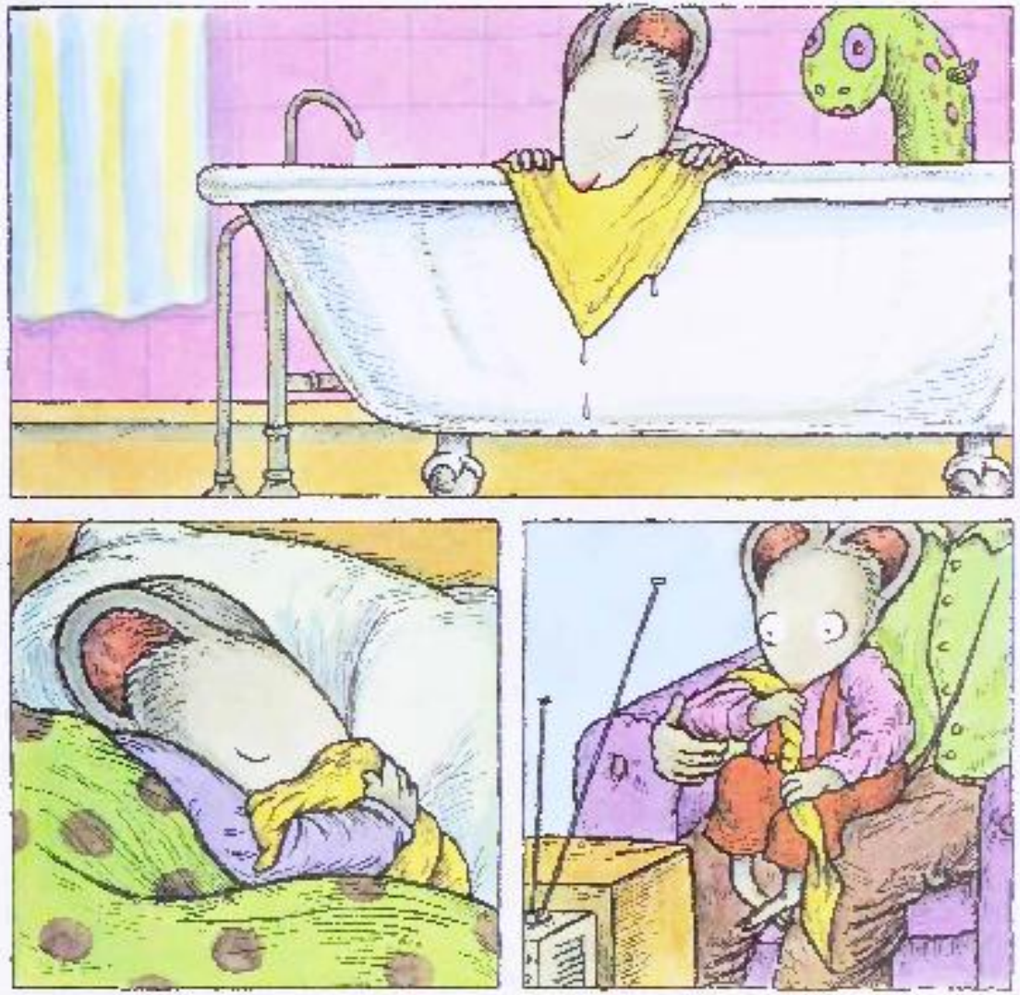

उसने उस को चूसा.

और उसे गले लगाया.

और उसे घुमाया-मरोड़ा.

“हम क्या करेंगे?” ओविन की माँ ने पूछा.

“स्कूल शीघ्र ही शुरू होने वाला है,” ओविन के पिता ने कहा.

“कंबल को स्कूल नहीं ले जा सकता,” मिसेज़ ट्वीज़र्स ने कहा.

“क्या तुम ने नहीं कहने के बारे में नहीं सुना?”

ओविन के माता-पिता ने नहीं सुना था.

मिसेज़ ट्वीज़र्स ने उन्हें सारी जानकारी दी.

“मैं अपना कंबल स्कूल ले जाऊँगा,” ओविन ने कहा.

“नहीं,” ओविन की माता ने कहा.

“नहीं,” ओविन के पिता ने कहा.

ओविन ने कंबल में अपना चेहरा छिपा लिया.

वह रोने लगा और रोता रहा.

“चिंता न करो,” ओविन की माँ ने कहा.

“सब ठीक हो जायेगा,” ओविन के पिता ने कहा.

और फिर अचानक ओविन की माँ ने कहा, “मेरे मन में एक विचार आया है.”

यह बहुत ही आश्चर्यजनक और बहुत ही उत्तम और बहुत शानदार विचार था.

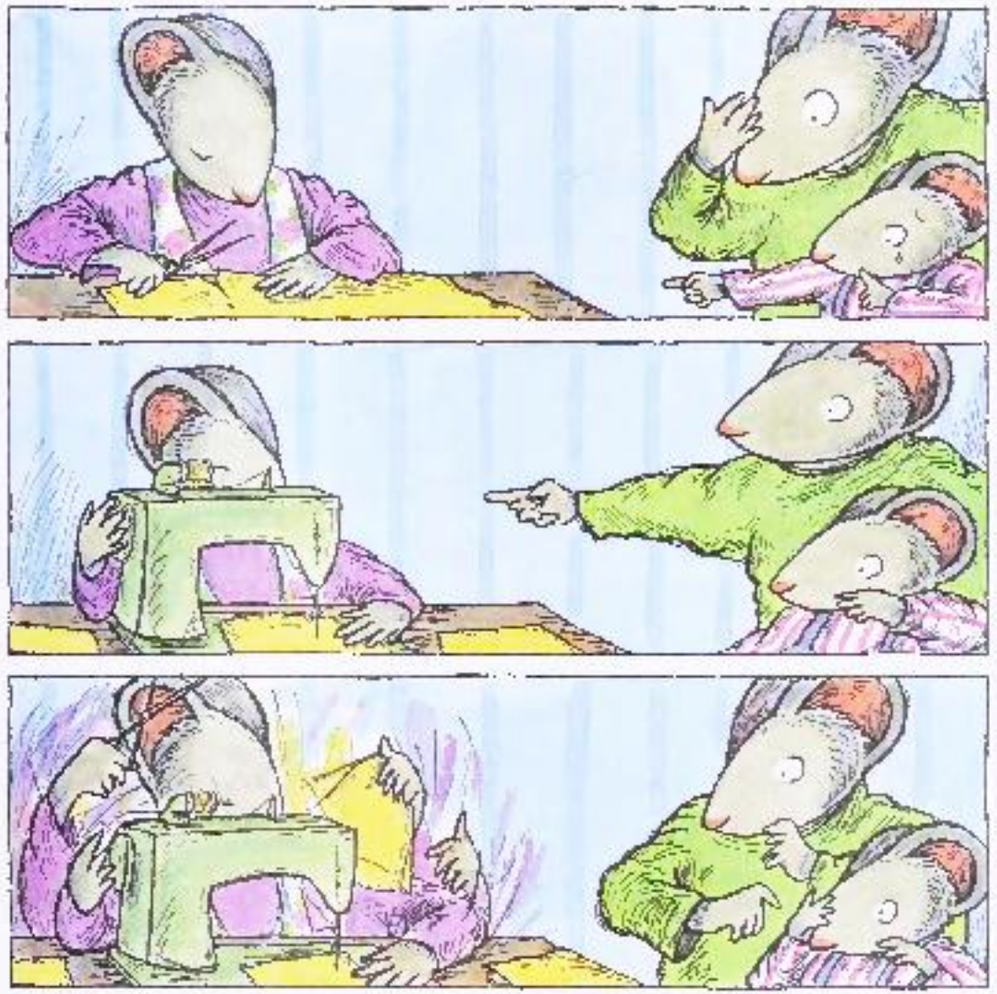

पहले उसने काटा.

और फिर उसने सिलाई की.

फिर दुबारा काटा और दुबारा सिलाई की.

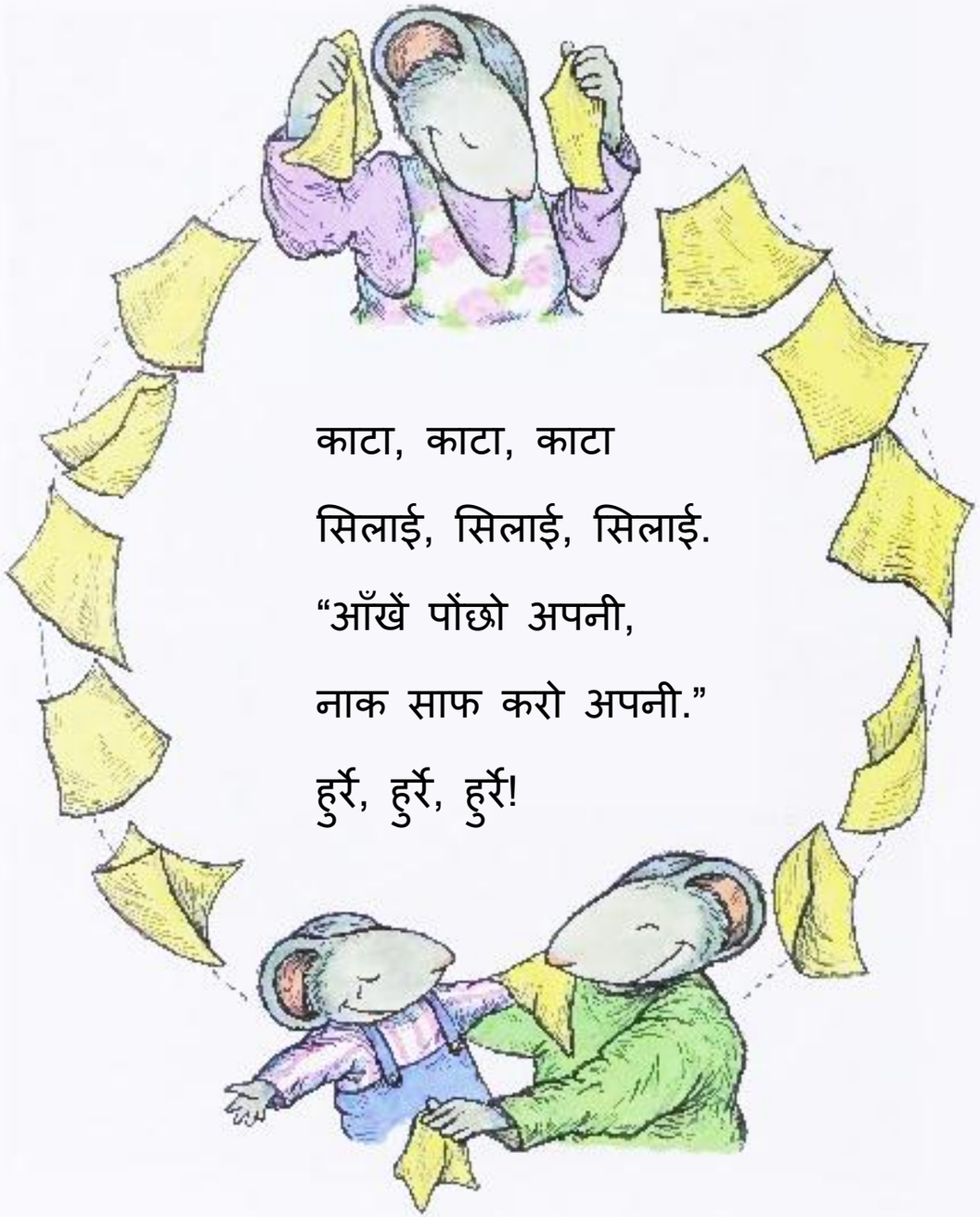

अब ओविन जहाँ कहीं भी जाता है कंबल से बना अपना एक रूमाल साथ ले जाता है.....

और मिसेज़ ट्वीज़र्स अब कुछ नहीं कहतीं.

समाप्त